12

सबके साथ सबका विकास

"वसुधैव कुटुम्बकम"

विश्व सम्पूर्ण के हर एक शख्स को अपने परिवार के सदस्य मानना ही भारतीय संस्कार है। हाथ में हाथ डालकर ऊँच नीच भाव के बिना पूरी दुनिया की खुशी और विकास हमारा सपना है।

2017 'सतत विकास' के नाम पर मनाया गया था। अंतर्देशीय अंतर्देशीय स्तर पर विकास के बारे में ज़्यादा चर्चा हो रही है। विकास के बारे में सोचते ही विकसित देश जैसे अमेरिका और विकासशील देश जैसे भारत, चीन और गरीब राष्ट्र सोमालिया, अफ्रिका के राष्ट्र सबके बारे में याद आते है। जैसे दूसरी विश्व युद्ध के बाद अमेरिका और सोवियत यूनियन विश्व शक्ती बने हमारी भी कोशिश है कि विकास से पूरी दुनिया में शक्तिशाली बनो। इस कैलिम नो उत्तर कोरिया के स्वेच्छ शासक ने मिसैल से दुनिया को आतंक में डालना चाहते है। परंतु विकास का सही मतलब

क्या है ? हमें याद रखना चाहिए कि भारत कैसे दो विश्व शक्तियों के सख्य न बनव अपने पैर खडा चाहा। विकास का सही मतलब जब होता है जब विकास का फ़ायदा दुनिया के सबसे दुर्बल और गरीब आदमी को भी तक पहूँचे। विकास तब साकार होगा जब हर चहरे पर खुशी मुस्कुराहट खुशी खिलेगा। एक व्यक्ति, एक संगठन या एक राष्ट्र का विकास को नहीं कह सकते विकास जब हो पाएगा तब सबके साथ सबका विकास होगा।

भारत एक विकासशील देश है। एक ब्रिक राष्ट्र। सबसे बडा लोकतंत्र देश, जनसंख्या में दूसरी स्थान। हमारे विकास का लक्ष्य है इन सवा सौ करोड देश वासियों का विकास। यही आदर्श भारत पहले से लिए है। यही चिंतां थी हमारे महा पुरुष जैसे गांधीजी आ, नेहरू आदी को भी। गांधीजी कहते थे कि भारत की आत्मा गाँवों में है। इसलिए तो उन्होंने राष्ट्र के विकास कैलिए कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित किया। भारत का स्वतंत्रता संग्राम का उद्देश्य भी यही यह था। आम जनता की जीवन में खुशी लाना न किसी साम्राज्य की अधीनता में पडे। स्वतंत्रता के बाद भी यहाँ की ज्यादातर योजनाएँ सब समाज के

③

12

सबसे कष्टमय लोगों के उद्धारण केलिए थी, इसलिए तो 'विविधता में एकता' रखकर हमने सबसे बडा लोकतंत्र देश बना। लोकतंत्र में जन के राय को ज़्यादा अहम है। हमारे आर्थिक व्यवस्था भी मिश्र व्यवस्था है। सार्वजनिक को ज़्यादा ध्यान देकर कंपनियों को भी हमने स्वागत किया। विकास केवल बडे मकान बन होना बडे उद्योगों होने से नहीं। हमारे प्रथम पंचवत्सर योजनाएँ गरीबी को मिटाने केलिए और कृषि को बढ़ावा देने केलिए था। हमारे राष्ट्र गरीबों के क्षेम को बडी मायना देती हैं। उनको रेशन कार्ड उनको धनसहाय सब मिलते हैं। अल्पसंख्यक और दलित लोगों केलिए सभी क्षेत्रों में आरक्षण है। भारत में बनाए अन्नपूर्ण जैसे योजनाओं से कम रुपये में अनाज मिलता है। विकलांगों को शिशु क्षेम को सरकारी योजनाएँ हैं। महात्मा गांधी रोज़गार योजना से रोज़गार उपलब्ध है। घर नहीं होने वालों के प्रधानमंत्री आवास योजना आदी क्षेम योजनाएँ।

राष्ट्र के व्यय ज्यादातर दो तरीके में होते हैं। विकास केलिए उपयोग करते धन और गैर विकास केलिए उपयोगित

पैसा। इनमें विकास केलिए उपयोगित धन ही राष्ट्र के उन्नयन में काम आ सकता है। बाकि सब पेंशन, लोन आदी के नामपर जाएगा। पर विकास केलिए हर राष्ट्र, हर तरीके से अपने अ संपत्ती के अनुसार उपयोगित करते हैं। कैसे विनियोग करना चाहिए राष्ट्र का धन। राष्ट्र का धन पूरे राष्ट्र के आम जनता केलिए प्रयोजनजित बनना चाहिए। न किसी व्यापारियों या अमीरों के सेवा केलिए उपयोगित करना चाहिए। तो सरकार के उपयोग जैसे होगा राष्ट्र का विकास।

विकास को समझने केलिए सकल घरेलू उत्पन्न (GDP) काम आता है। पर इसके अलावा जन की खुशी सूचिका आदी सूचनाएँ वैश्विक स्तर पर देखा जाती है। इसमें जितना जन जीवन खुशी हुआ उतना विकास हुआ। इतने विकास के बाद भी भारत इस सूचिका में नीचे स्थान पर है। क्या है इसका मतलब? क्या हमारे विकास सही रास्ते पर चल रहे है? इसका मतलब हमारे विकास का फ़ायदा आम जनता तक पहुँच नहीं पा रहे।

⑤

12

[stamp]

विकास सभी क्षेत्रों पर आर्थिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, स्वास्थय के क्षेत्र, विज्ञान का क्षेत्र, शिक्षा के क्षेत्र, सूचना सभी क्षेत्र। 19 ~~शताब्द~~ शताब्दी में हुई औद्योगिक क्रांती पूरे विश्व को बदलाया। भारत में भी बडी उद्योगों के आरंभ हुए। भारत में कम्प्यूटर आया सभी जगह पर बिजली आये। हमारे ISRO ने बडी सम्मान हमारे लिए। कृषि में हरा विप्लव के साथ बडी उन्नमन हुई। ~~स्वाद~~ हम खाद्य स्वयं वर्षा पर्याप्त बने। प्रतिरक्षा में भी हमें शक्त देश बना। हमें हथियार हैं। हमारे स्वास्थय मंडल और आयुर्वेद तो विश्व प्रसिद्ध हैं। परमाणू परीक्षण में भी आगे बडे। अब्दुल कलाम, एच. जे. भाभा आदी महा पुरुष। इन सबके बाजवजूद भी क्यों हम विकास सूचिका में पिछड गये।

कारण यह है विकास सबका विकास नहीं था। हमारे देश में भी ~~अमीर~~ विश्व के सबसे अमीर लोगों के लैन पर होने वाले करोडपती हैं।

कुछ लोग जब महल बनाते है तो अब भी कुछ लोग कुटिर में है। कुछ लोग जब बड़े रैसटरन्ट में जाकर खाना पूरी नहीं खाते तो कुछ लोग एक दैर के खाने के लिए तरसते है। कौन कह सकता कु दो तीन अमीर लोगों को देखकर पूरी दुनिया अमीर है। धन किसी के पास इकट्ठे होने को नहीं परंतु सबमें बाटने को है। भारत में अब भी ~~कही~~ गरीबों की संख्या ज्यादा है। भारत में अब भी कुपोषण की वजह से जनन समय के मृत्यू दर ज्यादा है। भारत में अभी भी लोग चिकित्सा के बिना मरते है। भारत में अब भी निरक्षर के अंग कम नहीं। तो कैसे कैह सकते है हमने विकास पाया? अब भी हमारे देश में कई जगह पर शौचालय नहीं। इसलिए तो हम स्वच्छ भारत जैसे योजनाएँ बनायी। सबसे ज़्यादा युवक होने के बावजूद हमारे युवक बेरोज़गार है। जब लोग बीमारी संक्रामक बीमारी या किसी महा रोग से मरते है तो हमें शर्म आती है कि इसके विरुद्ध प्रतिरोध सूची नई।

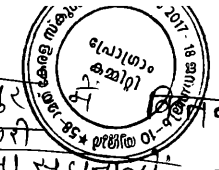

2017 - 18

लगायी। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में कितने बच्चे मरे क्यों? हमारे सरकारी आसपतालों में लोगों को दवायी नही और नीचे सोते है। देश के राष्ट्र ~~नगर~~ केंद्र में दिल्ली में लोग साँस नही ले पा रहा। क्या इसे विकास बोल सकते है? हमारे पुण्य नदियाँ गंगा भी मलिन है क्या यह विकास है। ~~सक~~ सरकारी कार्यालयों के आगे लोग दिनों तक खडे होने पर भी आम जनता को कुछ नहीं मिलता। विकास के नाम पर देश द्रोह हो रहे है। इसके जिम्मदार सरकार और कई अंतरदेशीय कंपनियाँ भी है।

विकास होते होते बाह्य रूप से ही नहीं, हमारे संस्कार को भी चोट पहुँचा है। ~~हमन~~ नैतिक मूल्यों को ~~च~~ छोडकर लोग अपने स्वार्थ विलासताओं के आगे है। नारी आज भी पीडित हो रही है। बालश्रम, दहेज आदी कलंकताएँ। हमने देखा दलित विभाग आज भी पीडित है। ~~सरक~~ ~~शास~~ राजनीती में क्या स्थान है इन बलहीन लोगों को। निरक्षर और गरीब लोगों को सब उल्लू बना रहे है। हम देखते हैं कि

कुछ गरीब लोगों को रेशन कार्ड भी नही और 3 अमीर लोग ब्याज रूप से अपने लिए फायदा बनाता है। विकास केलिए सबसे बड़ा खतरा है भ्रष्टाचार। अपने पद के लाभ उठाने भ्रष्टाचारी साधारण जन के धन को ही चोर करती है। कोई दे भी देश इससे विमुक्त नही। हमने देखा पारडैस पेपर्स में कितने अमीर लो प्रमुख व्यक्तियों के नाम आये। हमारे देश में कितनी सारे घोटेला और कितनी राजनितिज्ञ, कर्मचारी उसमें फसे। 2-जी स्पेक्ट्रम एवं राष्ट्रखेल में भी अन्याय किया। कोई भी क्षेत्र इससे विमुक्त नही। काला धन कि समस्या देश की अर्थव्यवस्था को तोडता है। इन सबके फ़ायदा कुछ सीमित लोगों को है। आतंकवादी भी अपने स्वार्थता केलिए आम जनता के जीवन मुश्किल में डालते है। लालफिताशाही, रिश्वतखोरी सब समस्याएँ है। सरकार भी किसी कंपनियों या व्यक्तियों के फायदे केलिए कार्य करते तब लोग जीवन कष्टमय दिखते है। इसलिए सार्वजनिक कंपनियों की ज़्यादा देखभाल की

ज़रूरत है।

पूरी विश्व विकास के लिए तरसते है। इसलिए सबके विकास होने के लिए ताकत राष्ट्र ग़रीब राष्ट्रों की सहायता करते है फिर भी दंगे, युद्ध सब हमारे विकास में मुश्किल बनते है। कुछ लोग या कुछ राष्ट्र के स्वार्थता के लिए पूरी दुनिया कि विकास में ये समस्या बनना अच्छी नहीं। हिटलर नाम के एक व्यक्ति के कारण कितने लोग के जीवन खोया। तो जब किसी लोग हड़ताल मनाते है प्रदर्शन करते है तो नष्ट हमें ही है। जब सार्वजनिक चीज़ों को हानी पहुँचाती है हड़ताल में नाश करते तब हमारी विकास ही पीछे रह जाना है। वैसे राजनितिक दल भी अपने फायदे के लिए धार्मिक कट्टरता उत्पन्न करता है तब वह सीदे सादे लोगों को फसाते है। शिक्षित युव लोग को आतंकवाद के नाम पर दुरुपयोग करना देश के विकास को रोकने के लिए क्या और चाहिए, जातिवाद, क्षेत्रवाद सब झूठा है।

आखिर में सब विकास केलिए है ही समस्या साबित होगा। राष्ट्र अपने हथियार को किसी राष्ट्र को नष्ट करने केलिए नहीं। जब हिरोशिमा और नागासाकी में बम गिरा उसका दुष्परिणाम आज भी है।

यह ~~म~~ समझना चाहिए की मानवजाती एक जाती है। विकास किसी एक का नहीं हर एक का है। राष्ट्र के अधिकार सबको है और सबको मिलना भी चाहिए। समाज के ऊँचे लोगों के कर्तव्य है बाकी के संरक्षण। 2005 के सूचना अधिकार लोगों को मददगार है। सरकार के कर्मचारी आम जनता को लक्ष्य करके बनना चाहिए। देशप्रेम के सोच ~~च~~ बचपन से मिलना चाहिए वैसे सबको समान मानना है। ~~गरीबों~~, ~~के~~ ~~शाकि~~ नारी, बच्चे, बूढे सबको सभी जगह पर ज्यादा ख्याल मिलना चाहिए। अल्पसंख्यक लोगों केलिए भी, दलित लोगों को गरीब लोगों को उन्नमन प्राप्त करने में सहायता प्राप्त करते योजनाएँ। ~~लोकायुक्त~~ ~~विभिन्न~~ गाँवों और विकास नहीं पहुँचा जगहों को प्रथम स्थान

12

देना है। लोकायुक्त, विजिलंस आदि भ्रष्टाचारियों को पकड़ना है। ~~शि~~ अच्छे शिक्षा, उंच शिक्षा, स्वास्थ्य परिरक्षण सब कम कीमत में मिलना है। पैसा देकर कुछ भी हासिल नहीं करना है ~~प पर~~ परंतु ~~योप~~ योग्यता के अनुसार मिलना चाहिए। प्रत्येक जन विभागों को आरक्षण होना है। रोज़गारोन्मुख शिक्षा प्रणाली मौजूद होना चाहिए। युवा असंतोष को ~~स~~ समाधन करें। लोगों के अत्यवश्यक चीज़ों के कीमत कम कर लीजिए। गरीब कृषकों को प्रत्येक ~~पद~~ योजना मैं बनाइए। पैसा न होने के कारण अधिकार न होने के कारण हमारे समाज में किसी भी चीज़ से आम लोगों ~~को~~ मिल हटाइए ~~मत~~ मत। आम जनता के ~~स्वर~~ आवाज़ देश का आवाज़ है। उनके अवश्यकताओं को पूरी करना ही सही विकास है। अभयार्थियों के भी ख्याल रखना है।

हमारे राज्य सरकार के 'आर्द्र' । योजना से विकलांग लोगों को प्रधानता मिल रहा है। धन दान करना अमीर लोगों को सीखना है। कर न चुकाके इकट्ठे धन को पकड़कर राष्ट्र को आगे ले जाए।

जैसे मार्टिन लूथर किंग ने कहा " मुझे एक सपना है जब ~~साह~~ मालिक के बच्चे और मालिक के नौकर के बच्चे एक साथ भाईचारा के मेज़ पर एकसाथ बैठे"। मुझे भी यह ही सपना है कि सबके साथ सबका विकास हो। ~~क~~ कुछ लोग की हँसी में कुछ लोग को रोना न पड़े। विकास सही होगा जब ~~मेरा~~ यह चिंता हम में आये कि मुझे जो कुछ है वह तुमें भी होना चाहिए। यह चिंता हर व्यक्ति को होना चाहिए हर होना चाहिए हर शासक को हर राष्ट्र को होना चाहिए और पूरी दुनिया को होना चाहिए। तब रास्ते पर हमगा। विकास का मतलब सही होगा। प्यार और भाईचारा के साथ सीखते है हाथ बाटने को मदद करने को एक ~~बि~~ प्रगतीपूर्ण दुनिया के निर्माण को। संयुक्त राष्ट्र संघ और सारी सं संगटनों के साथ हमारे भी जीवन दुनिया के विकास में काम आए।